क्रांति समय
हिन्दी दैनिक अखबार में विज्ञापन, प्रैस नोट, जन्म दिन की शुभकामनाएँ, या अपने विस्तार में किसी भी समस्या को अखबार में प्रकाशित करने के लिए संपर्क करें:-
बी-4 घंटी वाला कॉम्पलेक्ष उधना तीन रास्ता, उडुप्पी होटल के बगल में, सूरत-394210
मो. 9879141480

दैनिक
क्रांति समय

RNI.No. : GUJHIN/2018/75100

क्रांति समय
हमारे यहां पर एल.आई.सी., कार-बाईक-ट्रक का इन्सयोरेंशन, रेल टिकट, एयर टिकट बनवाने के लिए संपर्क करें:-
बी-4 घंटी वाला कॉम्पलेक्ष उधना तीन रास्ता, उडुप्पी होटल के बगल में, सूरत-394210
मो. 8980974047

संपादक : सुरेश मौर्या मो. 9879141480 सह संपादक : संदीप मौर्या
E-mail: krantisamay@gmail.com
सूरत, वर्ष: 1 अंक: 271, शुक्रवार, 26 अक्टूबर, 2018, पेज: 4, मुल्य 1 रु.
रजीस्ट्रड ऑफिस:- 191 महादेव नगर, हरि नगर-2 के पीछे, उधना, जिला-सूरत, गुजरात
Email: krantisamay@gmail.com Web site : www.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

सार समाचार

गोपालपुर में सीवर लाइन बिछाने का उद्घाटन

नई दिल्ली। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने बुधवार को दिल्ली जल बोर्ड की योजना के तहत सीवर लाइन बिछाने का उद्घाटन किया जिससे गोपालपुर गांव और गोपालपुर एक्सटेंशन के लोगों को इसका लाभ मिलेगा। इस योजना के अनुसार तिमारपुर विधानसभा क्षेत्र के गोपालपुर और गोपालपुर एक्सटेंशन गांव में सीवर लाइन बिछाने के कार्य को 11 महीनों में पूरा कर लिया जाएगा। इन सीवर लाइनों पर कुल लागत 2.36 करोड़ रु पए आएगी। इस योजना का लाभ पास के कॉलोनियों में रह रहे करीब 6000 हजार लोगों को होगा। इन कॉलोनियों के सीवेज को नेहरू विहार से पम्प करके कोरोनेशन पिलर सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट में डाला जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली सरकार ने पिछले साढ़े तीन साल में बिजली, पानी, शिक्षा, स्वास्य में ऐतिहासिक काम किए जिसकी चर्चा न सिर्फ देश में बल्कि विदेशों में हो रही है।

रात में गुलाबी ठंड का होने लगा अहसास

नई दिल्ली। रात के तापमान में गिरावट का दौर शुरू हो गया है, जिससे दिल्ली की रात सुहानी होने लगी है। दिन का तापमान अभी भी औसत से ऊपर बना है, जिसमें अगले सप्ताह से गिरावट आनी शुरू हो जाएगी। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार अगले सप्ताह से दिल्ली में मामूली ठंडक शुरू हो जाएगी। बुधवार को आयानगर इलाके का न्यूनतम तापमान 14.6 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया, जो सामान्य न्यूनतम तापमान 16.1 डिग्री सेल्सियस से करीब दो डिग्री सेल्सियस कम है। तापमान में गिरावट आने से रात के वक्त अब गुलाबी ठंड का अहसास होने लगा है। सुबह के वक्त पार्क घूमने जाने वाले लोगों को ठंड का सामना करना पड़ रहा है। मौसम विभाग के अनुसार बुधवार को न्यूनतम तापमान औसत से एक डिग्री सेल्सियस गिरकर 16.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जबकि अधिकतम तापमान औसत से एक डिग्री ऊपर चढ़कर 32.5 डिग्री दर्ज किया गया। बुधवार को गुरुग्राम का न्यूनतम तापमान 13.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया जो आज का सबसे कम तापमान के तौर पर दर्ज हुआ। मौसम विभाग ने अपने पूर्वानुमान में कल यहां के तापमान के 32 और 17 डिग्री सेल्सियस के आसपास बने रहने की संभावना जतायी है।

दिल्ली नगर निगम स्कूल के सेप्टिक टैंक में लड़की का कंकाल मिला

नई दिल्ली, एजेंसी। राजधानी दिल्ली के अलीपुर स्थित नगर निगम स्कूल के सेप्टिक टैंक से बुधवार शाम को एक लड़की का कंकाल मिलने से हड़कंप मच गया। पुलिस ने कंकाल को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल भेज दिया है। जानकारी के अनुसार, पुलिस को बुधवार शाम को सूचना मिली थी कि अलीपुर इलाके के मुखमेलपुर के नगर निगम स्कूल में एक शव पड़ा है। इसके बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने पाया कि स्कूल का सेप्टिक टैंक ओवरफ्लो कर रहा था। उसके पास ही कपड़े पड़े हुए थे। पुलिस ने टैंक का ढक्कन खोल कर देखा तो उसमें एक कंकाल पड़ा हुआ था जो कि एक लड़की का था। इसके बाद उसे कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल भेज दिया। लड़की की पहचान के लिए पुलिस आस-पास के इलाके और स्कूलों से गायब बच्चों के बारे में जानकारी जुटा रही है। पुलिस स्कूल के अधिकारियों और टैंक के रखरखाव में शामिल लोगों से पूछताछ कर रही है।

महर्षि वाल्मीकि की जयंती पर बुधवार को निकाली गई शोभायात्रा में शामिल एक झांकी।

आरटीआई का जवाब न देने पर सूचना आयोग ने तहसीलदार को भेजा जुर्माने का नोटिस

गुरुग्राम। हरियाणा के गुरुग्राम में सूचना का अधिकार (आरटीआई) के तहत मांगी गई जानकारी का जवाब नहीं देने पर सूचना आयोग ने तहसीलदार को जुर्माने का नोटिस भेजा है। दरअसल, एक आरटीआई कार्यकर्ता ने पिछले साल अक्टूबर में आर्थिक कमजोर वर्ग (ईडब्लूएस) के लोगों को मिले फ्लैट्स में कितने फ्लैट्स की पांच साल पूर्व रजिस्ट्री हुई, इसकी जानकारी मांगी थी। एक साल बीत जाने के बाद भी तहसीलदार की ओर से जवाब नहीं दिया गया। उसके बाद नौ अक्टूबर 2018 को सूचना आयुक्त ने तहसीलदार से जवाब मांगा कि आरटीआई का जवाब न देने पर क्यों न आप पर 25 हजार रुपये का जुर्माना लगाया जाए। अब इस मामले में सूचना आयोग के पास नौ फरवरी 2019 में सुनवाई होगी।

»»» एम्स में बढ़ी मरीजों की संख्या

30 दिन में 11 गुना बढ़ा दिल्ली का प्रदूषण

नई दिल्ली। राजधानी की हवा में प्रदूषण की मात्रा तीस दिनों में ग्यारह गुना तक बढ़ गई है। महीने भर पहले यानी 25 सितंबर को जहां हवा में प्रदूषक कण पीएम-10 की मात्रा 34.7 के स्तर पर थी, वहीं बुधवार की दोपहर बाद हवा में पीएम-10 की मात्रा 369.9 के स्तर पर पहुंच गई।

पर्यावरण विशेषज्ञों के मुताबिक ठंड बढ़ने के साथ ही दिल्ली की हवा और खराब होने का अंदेशा है।

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के मुताबिक, बुधवार सुबह से ही राजधानी की हवा में प्रदूषक कणों की मात्रा लगातार बढ़ती गई।

दोपहर बाद तीन बजे पीएम-10 का स्तर 369.9 पर पहुंचा गया। जबकि, पीएम-2.5 का स्तर 168 तक पहुंच गया। महीने भर पहले यानी 25 सितंबर को यह सिर्फ 19.5 पर था। मालूम हो कि पीएम-10 की मात्रा 100 और पीएम-2.5 की मात्रा 60 के नीचे होने पर ही उसे स्वास्थ्य के लिए अच्छा माना जाता है।

एम्स में मरीजों की संख्या बढ़ी

दिल्ली में प्रदूषण का स्तर बढ़ने से अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में मरीजों की संख्या में तेजी से इजाफा हुआ है। प्रदूषण के कारण सांस की तकलीफ लेकर आने वाले मरीजों की संख्या रोजाना बढ़ती जा रही है। जानकारी के अनुसार, एम्स के पल्मोनरी विभाग की ओपीडी में मरीजों की संख्या में 80 फीसदी वृद्धि हुई है। अधिकतर मरीज सांस लेने में तकलीफ, फेफड़ों में परेशानी व अस्थमा सहित दूसरी दिक्कतों को दिखाने के लिए पहुंच रहे है। एम्स के पल्मोनरी विभाग के एक वरिष्ठ डॉक्टर के मुताबिक ओपीडी में मरीजों की कई गुना बढ़ गई है। ज्यादातर मरीजों को सांस लेने में तकलीफ है, सबसे ज्यादा बच्चे और महिलाएं है।

एम्स के एक और डॉक्टर ने बताया कि पिछले सप्ताह दो युवक सांस लेने में तकलीफ, गले में खुश्की व दर्द की शिकायत लेकर पहुंचे थे। इनमें से एक कर्नाटक और दूसरा उत्तर-पूर्व में नौकरी करता है।

दोनों ही दिल्ली के मूल निवासी हैं, जो कुछ समय पहले वापस लौटे थे। प्रदूषित आबोहवा के कारण दोनों की ऐसी स्थिति हो गई है। जांच के दौरान दोनों स्वस्थ पाए गए हैं। दिल्ली का वातावरण प्रदूषित होने से इन्हें यहां से दूर रहने की सलाह दी गई है। डॉक्टरों का कहना है कि हर साल सर्दियों में प्रदूषण की वजह से मरीजों की संख्या में इजाफ होता है।

दिवाली के बाद स्थिति खतरनाक होगी

एम्स के डॉक्टरों की मानें तो दिवाली के बाद स्थिति और ज्यादा खतरनाक हो सकती है। लोग घर से निकलते वक्त मास्क लगाकर निकलें। गुनगुने पानी से गरारे और गर्म पानी से स्नान करें। इससे त्वचा को कोई नुकसान नहीं पहुंचेगा। साथ ही अपनी दिनचर्या पर अधिक ध्यान दें।

»»» सुप्रीम कोर्ट ने कहा, पूरे गिरोह का पर्दाफाश किया जाना जरूरी

आम्रपाली ने ''बड़ी धोखाधड़ी' की है

नई दिल्ली, एजेंसी। उच्चतम न्यायालय ने बुधवार को कहा कि जमीन-मकान का कारोबार करने वाले आम्रपाली कंपनी समूह ने घर खरीदने वाले ग्राहकों से जुटे पैसे को हेराफेरी कर दूसरी कंपनियों में पहुंचा दिया और इस ''बड़ी धोखाधड़ी' में शामिल ''बड़े गिरोह' को सामने लाना ही होगा।न्यायमूर्ति अरुण मिश्रा और न्यायमूर्ति यूयू ललित की पीठ को फोरेंसिक ऑडिटरों (खातों में आपराधिक हेराफेरी की जांच करने वाले ऑडिटरों) ने बताया कि कंपनी के दस्तावेजों से पता चलता है कि समूह की एक कंपनी द्वारा गौरीसूत इंफ्रास्ट्रक्चर प्राइवेट लिमिटेड को 100 करोड़ रपए से अधिक की राशि हेराफेरी से पहुंचाई गई। फोरेंसिक आडिटरों ने यह भी कहा कि कानून के तहत नियुक्त कंपनी के ऑडिटरों ने भी कई गलतियां की और वे अपने कर्तव्यों का पालन करने में पूरी तरह विफल रहे।पीठ ने कहा, ''समूह द्वारा इधर उधर किए गए धन को वापस निकालना होगा। इसी के लिए यह फोरेंसिक आडिट है और यह इस लिए भी है कि इस (हेराफेरी) सबके पीछे जिम्मेदार लोगों को पकड़ा जाए और जरूरी हो तो उन्हें जेल भेजा जाए। पीठ ने कहा, ''यह एक बड़ा गिरोह है जिसका पर्दाफाश जरूरी है। उन्होंने (आम्रपाली समूह ने) बड़ी धोखाधड़ी की है। हम देखते हैं कि क्या किया जा सकता है। फोरेंसिक ऑडिटरों रवि भाटिया और पवन कुमार अग्रवाल ने न्यायालय को बताया कि उन्हें समूह की कुछ कंपनियों द्वारा घर खरीदारों के पैसे का हेरफेर करने की जानकारी मिली है और इसके लिए कुछ मुखौटा कंपनियां भी बनाई गई थीं। सुनवाई के दौरान ऑडिटरों ने कहा कि उन्हें अभी तक इस संबंध में कोई धमकी नहीं मिली है। पीठ ने कहा, ''यदि धमकी का थोड़ा सा भी शक हो, आप हमें बताइए। कोई भी कितना भी बड़ा हो, आप हमें बताएं। हम देख लेंगे। ऑडिटरों ने पीठ को बताया कि गौरीसूत के निदेशक आशीष जैन और विवेक मित्तल समूह के विधायी ऑडिटरों के रिश्तेदार बताये जाते हैं।

दो और कर्मचारी डाटा लीक करने में शामिल

»»» पेटीएम फिरौती कांडः

नोएडा। पेटीएम फिरौती कांड में नामजद चार आरोपियों के अलावा कंपनी के ही दो अन्य कर्मचारी भी पुलिस की रडार पर हैं। पुलिस को संदेह है कि दोनों कर्मचारियों ने डाटा चोरी करने में सोनिया धवन और देवेंद्र का साथ दिया था। पुलिस ने इनके खिलाफ पुख्ता सबूत जुटाने शुरू कर दिए हैं। पुलिस का कहना है कि सबूत मिलने पर जल्द ही दोनों को गिरफ्तार किया जाएगा। एसएसपी डॉ. अजयपाल शर्मा ने बताया कि पूरे प्रकरण की गहनता से जांच की जा रही है। सोनिया और देवेंद्र ने कंपनी का डाटा अपने आईफोन और बाहरी हार्डडिस्क के जरिये चोरी किया था। सोनिया और देवेंद्र को डाटा चोरी करने में एक माह का वक्त लगा। एक दिन डाटा चुराते वक्त देवेंद्र को कंपनी के दो कर्मचारियों ने देख लिया था। देवेंद्र ने इस बारे में दोनों से किसी को न बताने की हिदायत दी। उनको देवेंद्र ने धमकी देते हुए कहा कि यदि उन्होंने इस बारे में किसी को बताया कि वह उन्हें नौकरी से निकलवा देंगे। यह बात देंवेद्र ने सोनिया से बताई तो वह डर गई। सोनिया ने दोनों कर्मचारियों से मिलकर मोटी रकम देने का लालच दिया।

देवेंद्र से हुई पूछताछ में यह खुलासा हुआ है। हालांकि, देवेंद्र ने अभी दोनों कर्मचारियों के नाम पुलिस को नहीं बताए हैं। एसएसपी ने बताया कि दोनों कर्मचारियों की फिरौती मांगने में कोई भूमिका थी या नहीं, पुलिस इसकी जांच में जुटी है।

दोनों कर्मचारियों की कॉल डिटेल खंगाली जा रही है। हालांकि, यह पता चल चुका है कि फोन पर सोनिया व देवेंद्र की दोनों कर्मचारियों से बात होती थी। पुलिस दोनों के खिलाफ सबूत जुटा रही है। भूमिका सामने आते ही पुलिस दोनों को गिरफ्तार करेगी।

रुपक जैन से फिरौती मांगने के मामले में कार्रवाई नहीं

सोनिया धवन के पति रूपक जैन से पांच करोड़ रुपये की फिरौती मांगने के मामले पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की है। पुलिस ने एनसीआर दर्ज करने के बाद न तो फिरौती मांगने वाले के नंबर की जांच की और न ही कभी पीड़ित से इस संबंध में मिलने का प्रयास किया। सोनिया के परिवार का कहना है कि अजय शेखर ने साजिश के तहत उन्हें फंसाया है। जिस नंबर से उनसे पांच करोड़ की फिरौती मांगी गई है, वह कॉलर ही इस पूरे प्रकरण की पोल खोल सकता है लेकिन पुलिस उसे तलाश करने का प्रयास नहीं कर रही।

चौथे आरोपी की तलाश में दबिश

फरार चले रहे चौथे आरोपी रोहित चोमल की तलाश में पुलिस कोलकाता की खाक छान रही है। लेकिन अभी तक पुलिस को उसका सुराग नहीं लग सका है। आरोपी आईटी एक्सपर्ट है। लिहाजा वह पुलिस को गुमराह करने के लिए बार-बार अपना ठिकाना बदल रहा है। जल्द ही पुलिस उसे गिरफ्तार करने का दावा कर रही है।

सोनिया से जेल में मिली उनकी बहन

सोनिया की बहन रूपाली, उसके पति व भाभी और वकील कंचन बुधवार को सोनिया और रूपक से जेल में मिले। सोनिया ने अपनी वकील से बताया कि उन्हें बेवजह फंसाया गया है।

डीडीसीए के खिलाफ मामला बंद करने पर आदेश सुरक्षित

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली एवं जिला क्रिकेट एसोसिएशन (डीडीसीए) फंड का कथित दुरुपयोग किए जाने की जांच बंद किए जाने के मामले में अदालत ने अपना फैसला सुरक्षित रख लिया। दिल्ली पुलिस ने अदालत में रिपोर्ट दाखिल कर कहा था कि उसे जांच में धन के कथित दुरुपयोग का सबूत नहीं मिला है। वह इस मामले की जांच बंद करना चाहता है। मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट अभिलाष मल्होत्रा इस मुद्दे पर 30 अक्टूबर को अपना फैसला सुनाएंगे। इस मामले में डीडीसीए के दो अधिकारी रविन्द्र मनचंदा व चेतन चौहान पर एसोसिएशन के फंड की हेराफेरी और फर्जीवाड़े का आरोप लगाया गया था। इसको लेकर पूर्व क्रिकेटर सुनील देव की शिकायत पर नवम्बर, 2015 में प्राथमिकी दर्ज की गयी थी। प्राथमिकी में आरोप लगाया गया था कि सेंट्रल बैंक में खाता खोलकर डीडीसीए के बैंक खाते से 6.5 करोड़ रपए जमा कराये गये और 4.5 करोड़ रपए की सावधि जमा कराये गये। शिकायतकर्ता ने बाद में पुलिस को लिखित रूप से कहा था कि उसने यह प्राथमिकी गलतफहमी की वजह से दर्ज करायी थी। वह अपना शिकायत वापस लेना चाहता है। पुलिस ने 2016 में अपनी रिपोर्ट दाखिल कर कहा था कि उसे धन की हेराफेरी का कोई सबूत नहीं मिला है। वह इस मामले की जांच बंद करना चाहता है। उसे इस बात का भी कोई सबूत नहीं मिला है कि सेंट्रल बैंक में खाता खोलकर या डीडीसीए के दूसरे बैंकों के खाते से सेंट्रल बैंक में धन का हस्तांतरण किया गया है।

कैलाश गहलोत के घर से 37 लाख रुपये की नकदी, आभूषण जब्त

नई दिल्ली, एजेंसी। आयकर विभाग (आईटी) ने गुरुवार को दिल्ली सरकार में मंत्री कैलाश गहलोत व उनके परिवार के सदस्यों से 37 लाख रुपये की नकदी व करीब दो करोड़ रुपये के आभूषण जब्त किए हैं। गहलोत दिल्ली मंत्रिमंडल में परिवहन, कानून, राजस्व, सूचना प्रौद्योगिकी व प्रशासनिक सुधार मंत्री हैं।

विभाग की प्रवक्ता शुभी अहलुवालिया ने बताया कि हमने इस महीने के दूसरे सप्ताह में छापेमारी के दौरान 37 लाख रुपये नकद व 2 करोड़ मूल्य के आभूषण गहलोत और उनके परिवार के सदस्यों के व्यावसायिक परिसर व आवास से बरामद किए।

आईटी अधिकारी ने नाम उजागर नहीं करने की शर्त पर कहा कि गहलोत व उनकी पत्नी के नाम से बैंक लॉकर से अतिरिक्त गहने भी जब्त किए गए हैं, जिनका मूल्य 28 लाख रुपये है।

विभाग ने गहलोत और उनके परिवार के सदस्यों के 16 व्यावसायिक व आवासीय परिसरों में छापेमारी की थी।

ये दो कंपनियां ब्रिस्क इंफ्रास्ट्रक्चर एंड डेवलपर प्राइवेट लिमिटेड और कॉरपोरेट इंटरनेशनल फाइनेंशियल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड हैं। इन कंपनियों पर कर चोरी के आरोप हैं। ये छापे वसंत कुंज, पश्चिम विहार, नजफगढ़ व गुरुग्राम में मारे गए। इससे पहले आईटी अधिकारी ने दावा किया था कि उन्हें ऐसे दस्तावेज मिले हैं, जो कैलाश गहलोत द्वारा 120 करोड़ रुपये की कर चोरी को दिखाते हैं।

नौकरी का झांसा देकर महिला को इंटरव्यू के लिए बुलाया, कर दिया गैंगरेप

मोदीनगर। नौकरी दिलाने का झांसा देकर नोएडा की एक महिला के साथ गैंगरेप करने का मामला सामने आया है। दुष्कर्म की रिपोर्ट दर्ज कराने पर आरोपी महिला को परिवार सहित जान से मारने की धमकी दे रहे हैं। पुलिस ने इस मामले में रिपोर्ट दर्ज कर आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है।

नोएडा निवासी महिला ने बताया कि एक सप्ताह पहले फोन पर मोदीनगर निवासी एक युवक से उसकी बात हुई थी। उस व्यक्ति ने महिला को नौकरी लगवाने का झांसा देकर इंटरव्यू के लिए आने को कहा। महिला का आरोप है कि मंगलवार को वह मोदीनगर बस स्टैंड पर पहुंची। इसके बाद बाइक सवार युवक उसे हापुड़ मार्ग पर एक गांव में बनी कॉलोनी में ले गए।

फोन करने वाले व्यक्ति ने महिला का इंटरव्यू लेना शुरू किया, इसी दौरान एक युवक वहां चाय लेकर आया।

महिला का कहना है कि चाय पीने के बाद वह बेहोश हो गई। इसके बाद उन युवकों और उनके एक साथी ने बारी-बारी से उसके साथ दुष्कर्म किया। होश आने पर युवक महिला को वापस मोदीनगर बस स्टैंड के पास छोड़कर चला गया।

युवक ने महिला को धमकी दी है कि यदि यह बात किसी को बताई तो पूरे परिवार को जान से मार देंगे। थाना प्रभारी गजेंद्रपाल सिंह ने बताया कि गैंगरेप की रिपोर्ट दर्ज कर आरोपियों की तलाश शुरू कर दी गई है।

हाल में ही हुआ महिला का तलाक

थाना प्रभारी गजेन्द्रपाल सिंह ने बताया कि महिला का हाल में ही तलाक हुआ था।

इसके चलते वह काम की तलाश में थी। उन्होंने बताया कि महिला की तहरीर पर पूर्व प्रधान राजपाल और उसके एक अज्ञात साथी के खिलाफ सामूहिक दुष्कर्म की रिपोर्ट दर्ज की गई है। आरोपियों की तलाश के लिए पुलिस की दो टीमों का गठन किया गया है। महिला का मेडिकल परीक्षण कराकर गुरुवार को उसके मजिस्ट्रेट के समक्ष बयान दर्ज कराए जाएंगे।

संपादकीय

वायु प्रदूषण

दीपावली के दिन पटाखों की आतिशबाजी को पूर्ण प्रतिबंधित नहीं किया लेकिन जिस तरह की सीमाएं बना दी हैं, वे लागू हो जाएं तो दिल्ली और आसपास के क्षेत्र ध्वनि एवं वायु प्रदूषण से काफी हद तक मुक्त हो जाएंगे। रात के आठ से 10 बजे की समय-सीमा तो है ही। इसके साथ पटाखों की पिछले साल आवाज की जो तीव्रता निर्धारित की गई थी, वही रहेगी। किंतु इसमें सबसे महत्वपूर्ण पटाखों के निर्माण और उपयोग से संबंधित हैं। कुछ विभागों को अधिकार देना कि वो ध्यान रखें कि पटाखों के निर्माण में हानिकारक रसायनों का प्रयोग न हो, व्यावहारिक कदम है। मसलन, पेट्रोलियम एंड एक्सप्लोसिव सेफ्टी आर्गनाइजेशन (पेसो) से कहा गया है कि पटाखों में अल्यूमिनियम की मात्रा पर विशेष ध्यान रखे। बैरियम रसायन पूरी तरह प्रतिबंधित है। अभी तक के अध्ययन में सबसे ज्यादा प्रदूषण फैलाने वालों में इन दो रसायनों का नाम आया है। तो जो विभाग है उसे ही ध्यान रखना होगा। पेसो वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के तहत आता है। जिम्मेवारी उस पर है। लिथियम, आर्सेनिक, एंटिनमी (अंजन, सुरमा), सीसा और पारा युक्त पटाखे भी पूरी तरह प्रतिबंधित रहेंगे। साफ है कि अब इस तरह के पटाखों का निर्माण नहीं किया जा सकेगा। न्यायालय के आदेश के बाद अगर कंपनियां निर्माण करती हैं, तो उनके खिलाफ कार्रवाई हो सकती है।

पहले से बने हुए पटाखों में ये रसायन हैं, तो उनकी बिक्री दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में नहीं हो सकती। इसमें प्रतिबंधित पटाखे फोड़े जाने के लिए संबंधित इलाके के थाना प्रभारी को जिम्मेदार बनाया गया है। हालांकि थाना प्रभारी एक-एक गली में सिपाहियों को लगाकर कैसे पता कर सकेगा कि जो पटाखे छूट रहे हैं, वे प्रतिबंधित श्रेणी के हैं, या मान्य श्रेणी के? यह बड़ा प्रश्न है। बावजूद इसके हर कोई चाहता है कि हमारी आवोहबा इतनी स्वच्छ रहे कि मनुष्य सहित सारे जीव-जंतु आराम से सांस ले सकें। किसी तरह की बीमारी का शिकार न हों। आतिशबाजी की परंपरा हमारे यहां पुरानी है किंतु अगर आनंद में हम अपने लिए ही जहर फैलाने लगें तो उसको रोकना ही होगा। दीपावली उत्सव का एक लक्ष्य वायुमंडल को स्वच्छ करना भी है। हम जहरीले पटाखों द्वारा इस मूल लक्ष्य के विपरीत काम करते हैं। कम से कम उच्चतम न्यायालय के आदेश के बाद ग्रीन पटाखों का निर्माण आरंभ होगा और इसके प्रयोग के भी हम अभ्यस्त हो जाएंगे। उसके बाद समय-सीमा की आवश्यकता नहीं रह जाएगी।

विपक्षी गठबंधन

राहुल गांधी और उनके वरिष्ठ सहयोगियों को बोध हो चला है कि उनकी पार्टी अपने बूते 2019 का लोक सभा चुनाव जीत नहीं सकती। कांग्रेस के शीर्ष नेता समय-समय पर ऐसे बयान देते रहते हैं। पहले सलमान खुर्शीद ने इस तरह का विचार प्रकट किया था। अब पूर्व वित्त मंत्री पी. चिदंबरम ने सफाई देने के अंदाज में कहा है कि कांग्रेस ने आधिकारिक रूप से नहीं कहा है कि 2019 में विपक्षी गठबंधन सरकार बनाता है, तो राहुल ही प्रधानमंत्री होंगे। प्रधानमंत्री कौन होगा, इसका फैसला घटक दल करेंगे। कांग्रेसी नेताओं के विचार व्यावहारिक और वस्तुपरक हैं। जाहिर है कि सहयोगी दलों के प्रति कांग्रेस का रुख बदल रहा है। कांग्रेस लगातार कमजोर होती जा रही है। 2014 के चुनाव में उसका प्रदर्शन सबसे खराब था। राज्यों में भी सिमटती जा रही है। कर्नाटक में जनता दल (एस) के नेतृत्व वाली सरकार में वह जूनियर पार्टनर है, जबकि उसकी सीटें ज्यादा हैं। सवाल है कि ऐसी स्थिति में वह अपने सहयोगी दलों का नेतृत्व कैसे कर सकती है? राहुल जानते हैं कि विपक्षी दलों में इस पद के कई दावेदार हैं। इसलिए उन्होंने चुनाव परिणाम आने तक इस मुद्दे पर विराम लगा दिया है। उनका सुझाव है कि भाजपा को हराने के लिए विपक्षी दल एक मंच पर आएं और चुनाव जीतने के बाद नेतृत्व का चयन हो। दरअसल, कांग्रेस राष्ट्रीय पार्टी है।

पूरे देश में उसकी उपस्थिति है। इसलिए उसके रणनीतिकारों को उम्मीद है कि विपक्षी खेमे में उसे सबसे ज्यादा सीटें मिलेंगी। ज्यादा सीटें जीतने वाला दल ही प्रधानमंत्री पद की दावेदारी करेगा। लेकिन क्या चुनाव पूर्व विपक्षी दलों का गठबंधन आकार ले पाएगा। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के प्रमुख शरद पवार ने भी इसी तरह का संकेत दिया है। कांग्रेस के लिए राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ विधानसभा का चुनाव एक अवसर था। वह मायावती के साथ समझौता करके नजीर पेश कर सकती थी। ममता बनर्जी की कांग्रेस के साथ किसी तरह के गठबंधन में उसकी दिलचस्पी नहीं है। सपा का रुख भी स्पष्ट नहीं है। सुनिश्चित है कि राजग को हराने के लिए विपक्ष की एकता जरूरी है। कांग्रेस के लिए प्रधानमंत्री पद कोई मुद्दा नहीं है, तो उसे समान विचारधारा वाले दलों को साझा मंच पर लाने के लिएबड़ा दिल दिखाना होगा जैसा कि उसने कर्नाटक में करके दिखाया है।

सत्संग

गैर-जिम्मेदार

सांसारिक जीवन में किसी को शायद ही कुछ विशेष उपलब्ध हो पाता है। अपना सगा होते हुए भी एक पिता गैर-जिम्मेदार पुत्र को अपनी विपुल संपत्ति नहीं सौंपता। बाजार में विभिन्न तरह की वस्तुएं दुकानों में सजी होती हैं, पर उन्हें कोई मुफ्त में कहां प्राप्त कर पाता है? अनुनय-विनय करने वाले तो भीख जैसी नगण्य उपलब्धि ही करतलगत कर पाते हैं। पात्रता के आधार पर ही शिक्षा, नौकरी, व्यवसाय आदि क्षेत्रों में भी विभिन्न स्तर की भौतिक उपलब्धियां हस्तगत करते सर्वत्र देखा जा सकता है। अध्यात्म क्षेत्र में भी यही सिद्धांत लागू होता है। पात्रता के अभाव में अधिकांश को दिव्य आध्यात्मिक विभूतियों से वंचित रह जाना पड़ता है जबकि पात्रता विकसित हो जाने पर बिना मांगें साधक पर बरसती हैं। उन्हें किसी प्रकार का अनुनय-विनय नहीं करना पड़ता है। दैवी शक्तियां परीक्षा तो लेती हैं, पर पात्रता की कसौटी पर खरा सिद्ध होने वालों को मुक्तहस्त से अनुदान भी देती हैं। प्रकाश की ओर चलने पर छाया पीछे-पीछे अनुगमन करती है। अंधकार की दिशा में बढ़ने पर छाया आगे आ जाती है, उसे पकड़ने का प्रयत्न करने पर भी वे पकड़ में नहीं आती। इसी प्रकार अर्थात् दिव्यता की ओर-श्रेष्ठता की ओर परमात्म पथ की ओर बढ़ने पर छाया अर्थात् ऋद्धि-सिद्धियां साधक के पीछे-पीछे चलने लगती हैं। इसके विपरीत उन्हीं की प्राप्ति को लक्ष्य बनाकर चलने पर तो आत्म-विकास की साधना से वंचित बने रहने से वे पकड़ में नहीं आतीं। दिव्यता की ओर बढ़ने का अर्थ है- अपने गुण, कर्म, स्वभाव को इतना परिष्कृत, परिमार्जित कर लेना कि आचरण में देवत्व प्रकट होने लगे। इच्छाएं, आकांक्षाएं देवस्तर की बन जाएं। संकीर्णता, स्वार्थपरता हेय और तुच्छ लगने लगे। समष्टि के कल्याण की इच्छा एवं उमंग उठे और उसी में अपना भी हित दिखाई दे। दूसरों का कष्ट, दु:ख अपना ही जान पड़े और उनके निवारण के लिए मन मचलने लगे। सभी मनुष्य समस्त प्राणी अपनी ही सत्ता के अभिन्न अंग लगने लगें। आत्म विकास की इस स्थिति पर पहुंचे हुए साधक की, ऋद्धियां-सिद्धियां सहचरी बन जाती हैं। पर इन अलौकिक विभूतियों को प्राप्त करने के बाद वे उनका प्रयोग कभी भी अपने लिए अथवा संकीर्ण स्वार्थों के लिए नहीं करते। संसार के कल्याण के लिए ही उन शक्तियों का सदुपयोग करते हैं।

राष्ट्रीय शैक्षणिक एवं प्रशिक्षण परिषद

इस सोच के पीछे क्या शोध एवं मूल्यांकन पर आधारित कुछ तय हैं, या यह परिकल्पना कि ज्यादा समय तक प्रशिक्षण कार्यक्रम में रहने से अपने आप गुणवत्ता आ जाएगी? बेशक, गुणवत्ता के लिए कालावधि महत्त्वपूर्ण कारक है। लेकिन प्रश्न उठता है कि क्या एक वर्षीय बीएड पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता को कम करने वालों कारकों का विश्लेषण हमने किया है? क्या विश्लेषण के फलस्वरूप प्राप्त तयों को हम आगे इस कार्यक्रम का हिस्सा नहीं बनने देंगे? क्या प्रयोग के तौर पर बहुत पहले शुरू किए गए चार वर्षीय पाठ्यक्रम अधिक प्रभावशाली साबित हुए? और क्या तुलना में स्नातक के बाद एकवर्षीय और फिर अब दो वर्षीय पाठ्यक्रम से हमने इसे अधिक बेहतर पाया है?

सतीश पेडणोकर

मंत्री के बजट भाषण से शुरू हुआ चार वर्षीय बीएड पाठ्यक्रम लागू करने का संकल्प अब केंद्रीय मानव-संसाधन विकास मंत्री के माध्यम से आगे बढ़ने लगा है। राष्ट्रीय शैक्षणिक एवं प्रशिक्षण परिषद तथा राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद भी इसे मूर्त रूप देने की तैयारी कर रहे हैं। लगता है 2019 से पूरे देश में एक साथ इसे लागू करने से शिक्षण की दशा रातोंरात सुधर जाएगी। इस सोच के पीछे क्या शोध एवं मूल्यांकन पर आधारित कुछ तय हैं, या यह परिकल्पना कि ज्यादा समय तक प्रशिक्षण कार्यक्रम में रहने से अपने आप गुणवत्ता आ जाएगी? बेशक, गुणवत्ता के लिए कालावधि महत्त्वपूर्ण कारक है। लेकिन प्रश्न उठता है कि क्या एक वर्षीय बीएड पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता को कम करने वालों कारकों का विश्लेषण हमने किया है? क्या विश्लेषण के फलस्वरूप प्राप्त तयों को हम आगे इस कार्यक्रम का हिस्सा नहीं बनने देंगे? क्या प्रयोग के तौर पर बहुत पहले शुरू किए गए चार वर्षीय पाठ्यक्रम अधिक प्रभावशाली साबित हुए? और क्या तुलना में स्नातक के बाद एकवर्षीय और फिर अब दो वर्षीय पाठ्यक्रम से हमने इसे अधिक बेहतर पाया है? आज भी चार-वर्षीय बीएड पाठ्यक्रम वाले क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों की तुलना में विद्यार्थी किसी विविद्यालय के शिक्षा विभाग या संकाय से योग्यता हासिल करने को प्राथमिकता देते हैं। दोनों प्रकार के संस्थानों की भी हमने तुलना नहीं की है, और अवलोकन के आधार पर तुलना करते हैं तो शिक्षा विभागों के विद्यार्थी को कमतर नहीं पाते हैं इन चार वर्षीय पाठ्यक्रम वाले संस्थानों से। अभी तो दो वर्षीय पाठ्यक्रम की समीक्षा और फिर इसकी प्रभावकता की एक वर्षीय बीएड पाठ्यक्रम से तुलना भी शेष है, फिर देश किस परिवर्त्तन की अपेक्षा में इतना आतुर है? हमारे निर्णय का आधार तय जो शोध, मूल्यांकन, अवलोकन या फिर समीक्षा से प्राप्त किया गया हो, होना चाहिए। हमें विद्यालयी शिक्षा को मजबूत कर उच्च शिक्षा को मजबूत करना होगा। इस दृष्टि से जरूरी है कि विद्यालयी शिक्षा, अध्यापक शिक्षा और फिर अध्यापक शिक्षकों की शिक्षा में समन्वय हो। चतुर्थ वर्षीय पाठ्यक्रम को लागू करने के पक्ष में जो तर्क दिए जा रहे हैं, वो मान्य नहीं हो सकते। यह गुणवत्ता के लिए हैं। यह पाठ्यक्रम एमबीबीएस, बीटेक और सीए को ध्यान में रखकर विकसित किया जा रहा है। चतुर्थ वर्षीय पाठ्यक्रम से अध्यापक शिक्षा में सिर्फ सक्षम, गंभीर और योग्य शिक्षार्थी आएंगे। इस पाठ्यक्रम में प्रशिक्षु ब्लूव्हेल चैलेंज, मनोवैज्ञानिक साइबर गेम्स और अन्य मनोवैज्ञानिक समस्याओं को आसानी से हल कर सकने में योग्य बनेंगे। गुणवत्ता का संबंध गुणात्मक एवं मात्रात्मक जरूरत के अन्त:संबंध पर आधरित होता है। नियोजित शिक्षक, शिक्षाकर्मी, रोजगार की अनिश्चितता, अध्यापक शिक्षा का अनियंत्रित एवं अनियोजित विकास आदि शिक्षा की गुणवत्ता के बाधक तत्व हैं। क्या प्रतिष्ठित ढंग से सभी प्रशिक्षितों को उचित मासिक वेतन की नौकरी का भरोसा दिए बिना हम गुणवत्ता प्राप्त कर सकते हैं? महाविद्यालयों से अलग कर क्या हमने बारहवीं की शिक्षा की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए सार्थक प्रयास किए हैं? बीटेक की दुर्दशा हम देख रहे हैं, जहां बीटेक वाले बीएड में नामांकन ले रहे हैं। क्या हमें उतने ही प्रशिक्षित शिक्षक चाहिए जितने डॉक्टर? कौन नहीं जानता कि सीए की गुणवत्ता का संबंध उसकी गुणात्मक एवं मात्रात्मक आवश्यकता के संतुलन से है। अध्यापन व्यवसाय को आकर्षक एवं चुनौतीपुर्ण बनाए बिना हम उसमें सक्षम, योग्य और गंभीर लोगों को आकर्षित कर पाएंगे? मनोविज्ञान एक वर्षीय एवं द्विवर्षीय बीएड पाठ्यक्रम का अभिन्न हिस्सा रहा है, और हमेशा ही शिक्षा के मूल तत्त्व का सीधा संबंध मनोविज्ञान, दर्शन और समाज-शास्त्र के साथ-साथ प्रबंध से रहा है। तकनीकी भी शिक्षा का अभिन्न अंग रही है, किन्तु अब हम यांत्रिक तकनीक को ही तकनीक मानकर मानवीय पक्ष से समझौता कर रहे हैं। मशीन के अधिक उपयोग के कारण मनोवैज्ञानिक समस्याएं आती हैं, विद्यार्थी अवसादग्रस्त होते हैं, और हम दोष पाठ्यक्रम को देते हैं। शिक्षा में जितना मानवीय संवाद और संचार होगा उतना ही अधिक विद्यार्थी भावनात्मक दृष्टि से स्थिर रहेंगे। यहां विद्यार्थी के संपूर्ण परिवेश को मानवीय स्पर्श के करीब रखना होगा, चाहे वह पारिवारिक संवाद हो, समुदायिक कार्यक्रम में उपस्थिति या विद्यालय के क्रियाकलाप में शारीरिक एवं मानसिक भागीदारी। क्या हमने कोठारी आयोग, नई शिक्षा नीति (1986) तथा राष्ट्रीय पाठ्यर्चया की रूपरेखा (2005), एनसीईआरटी या फिर एनसीटीई द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रमों की रूपरेखा को लागू करने की कोशिश की? इन संस्तुतियों का अध्ययन या फिर इनका मूल्यांकन किया? यदि किया तो फिर शिक्षक को शिक्षाकर्मी क्यों बना दिया? शिक्षा को मजबूती प्रदान करने के लिए जरूरी है योग्य शिक्षकों का निर्माण, जिन्हें हम ससमय शिक्षा देकर दायित्व सौंपें। जरूरत आधारभूत संरचना को मजबूती देने की है, और जरूरत है अभिप्रेरित मानव-शक्ति की जो ईमानदारी से सभी निर्धारित जिम्मेवारी का निर्वहन करे। निर्माण और सशक्तिकरण हमारी शिक्षा का मूल-मंत्र होना चाहिए। तय से भटके अनावश्यक प्रयोग खर्चीले तो होंगे पर जरूरी नहीं कि प्रभावकारी भी हों। ऐसे कदम शिक्षा की उचित भागीदारी वाली राष्ट्रीय बहस के बिना नहीं उठाए जाने चाहिए और इसे अंतिम रूप तब दिया जाना चाहिए, जब हम राष्ट्र को आास्त कर सकें कि यह कदम पूर्व की व्यवस्था से हर प्रकार से बेहतर विकल्प है। यह भी ध्यान रखना होगा कि स्नातक तक सामान्य शिक्षा प्राप्त करने के फ लस्वरूप विद्यार्थी के पास अधिक विकल्प होते हैं, हमने राष्ट्रीय प्रशासनिक सेवाओं के लिए भी स्नातक ही योग्यता रखी है, महाविद्यालय और विविद्यालय में प्राध्यापक बनने का रास्ता भी स्नातक तक सामान्य शिक्षा से ही जाता है। तो क्या विशिष्ट पाठ्यक्रम की शिक्षा प्राप्ति और उस क्षेत्र में अवसर की कमी के कारण ऐसे शिक्षार्थी के लिए कुछ अन्य अवसर कम नहीं हो जाएंगे? वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में हमारा मूल-मंत्र सुदृढ़ीकरण होना चाहिए, गैर-जरूरी परिवर्तन नहीं। विशिष्टता वाली शिक्षा तभी मेधावियों को आकर्षित करती है, जब उसमें आकर्षक अवसर और उसका व्यावसायिक मूल्य हों।

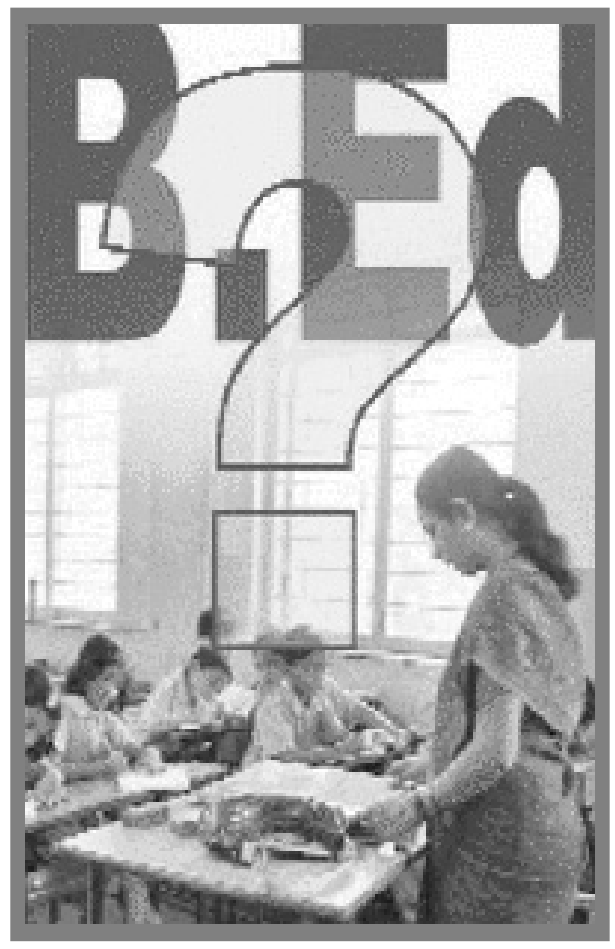

चलते चलते

भ्रष्टाचार तलाशने की जरूरत ही नहीं

आत्मनिर्भर होने के मामले में शायद सीबीआई ही तमाम संस्थानों में सबसे आगे है। अब खुद उसके यहां इतना भ्रष्टाचार है कि उसे कहीं और भ्रष्टाचार तलाशने की जरूरत ही नहीं रही। सीबीआई डायरेक्टर कह रहे हैं कि स्पेशल डायरेक्टर भ्रष्ट है और स्पेशल डायरेक्टर उन्हें यह कह रहा है। डायरेक्टर, स्पेशल डायरेक्टर के भ्रष्टाचार को खोद-खोद कर निकाल रहा है, और स्पेशल डायरेक्टर उनके भ्रष्टाचार को। सीबीआई को अब किसी नेता, व्यापारी या अधिकारी को गिरफ्तार करने की जरूरत नहीं। गिरफ्तार करने के लिए खुद उसके यहीं इतने अधिकारी हैं। कहीं छापा डालने की जरूरत नहीं। खुद अपने दफ्तर पर छापा डाल कर ही अब काफी संतुष्ट है। कहीं और फाइलें और कागज पत्र तलाशने की जरूरत नहीं है। उस पर कोई आरोप

सीबीआई डायरेक्टर कह रहे हैं कि स्पेशल डायरेक्टर भ्रष्ट है और स्पेशल डायरेक्टर उन्हें यह कह रहा है। डायरेक्टर, स्पेशल डायरेक्टर के भ्रष्टाचार को खोद-खोद कर निकाल रहा है, और स्पेशल डायरेक्टर उनके भ्रष्टाचार को। सीबीआई को अब किसी नेता, व्यापारी

नहीं लगा सकता कि कोई काम नहीं कर रही। उसके पास इतना काम है कि यह अधिकारी, उस अधिकारी के खिलाफ काम में लगा है, और वह अधिकारी इस अधिकारी के खिलाफ। व्यस्तता की तो हद है! उस पर कोई आरोप नहीं लगा सकता कि वह राजनीतिक हस्तक्षेप से ग्रस्त है। सरकार ने सिर पटक लिया कि वह जितना काम कर रही है, उतना काम न करे, अधिकारी एक-दूसरे के भ्रष्टाचार को उजागर न करें, एक-दूसरे की टीमों के अधिकारियों को गिरफ्तार न करें, अपने ही दफ्तर में छापेमारी न करें। पर सीबीआई इस राजनीतिक हस्तक्षेप की कतई परवाह नहीं कर रही। उस पर कोई आरोप नहीं लगा सकता कि वहां अधिकारी एक दूसरे की मदद करते हैं। अब भाई-भतीजावाद तो दूर, वहां तो अधिकारी भी एक-दूसरे की मदद नहीं करते। उस पर कोई पक्षपात करने का आरोप नहीं लगा सकता। अब बताइए कि कोई भी जांच एजेंसी इससे ज्यादा तटस्थ और निरपेक्ष क्या रहेगी कि अपने दफ्तर तक में छापामारी करने से गुरेज नहीं कर रही। वह एक बार फिर छाती ठोंककर दावा कर सकती है कि वह एक स्वतंत्र संगठन है। किसी की परवाह नहीं करती। न सरकार की, न देश की, किसी की नहीं। और तो और सीबीआई ने तो प्रधानमंत्री तक को एक अच्छा मौका दे दिया है। वे कह सकते हैं कि लोग मुझे तानाशाह कहते हैं, देखो कितना झूठ कहते हैं। सीबीआइ के दो अफसर तक तो मेरे काबू में नहीं। कुछ तो रहम करो यार!

फोटोग्राफी...

यंगून : म्यांमार में शरद पूर्णिमा के दिन ''थडींग्यूथ लान्टर्न' उत्सव धूमधाम से मनाया जाता है इस दिन लोग सम्मान स्वरूप बुजुगरे को उपहार देते हैं। चित्र में संन्यासियों को दान देता एक श्रद्धालु।

प्रवेश पर प्रतिबंध हटाने

अदालत द्वारा माहवारी आयु वर्ग की औरतों के सबरीमाला मंदिर में प्रवेश पर प्रतिबंध हटाने के बावजूद अयप्पा के दर्शन के लिए श्रद्धालुओं को भीतर नहीं घुसने दिया गया। उग्र भीड़ ने जोर-जबरदस्ती से दर्शनार्थी स्त्रियों को बलपूर्वक रोका। इस पर केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने कहा, पूजा करने के अधिकार का मतलब यह नहीं कि अपवित्र करने का अधिकार प्राप्त है। ईरानी ने कहा, यह साधारण सी बात है क्या आप माहवारी के खून से सना नैपकिन लेकर चलेंगे और किसी दोस्त के घर जाएंगे। आपको लगता है कि भगवान के घर ऐसे जाना सम्मानजनक है? यही फर्क है। स्पष्ट रूप से उन्होंने दकियानूसी परंपरा का पक्ष लिया और वाहियात तर्क प्रस्तुत किया। पहली बात, श्रद्धालुओं में इतना शील-संकोच होता ही है कि वे अपने देवता के दर्शन के दरम्यान स्वच्छता का ख्याल स्वयं रखती हैं। वे कितनी ही खुले विचारों वाली हों, उनमें इतनी समझ है कि वे माहवारी के दौरान मंदिर प्रांगण में स्वत: ही नहीं जाती। दूसरे, आज भी लड़कियां/स्त्रियां देवताओं को जाने ही दें, देवियों के मंदिर में भी रजस्वला प्रवेश से झिझकती हैं। दूसरी बात, यह जो ईरानी ने तल्खी में बोली कि, खून से सना नैपकिन लेकर दोस्त के घर जाएंगी, यह स्तरहीन और स्त्रित्व का उपहास है। स्त्री होने के नाते, उन्हें अहसास होना चाहिए कि इस दौरान चलना-फिरना, यात्रा करना, देर तक टांगों को सिकोड़ कर रखना कितना कष्टकारी होता है। खासकर अपने यहां, जहां स्त्री के लिए मूत्रविसर्जन की सुविधाएं तक नहीं हैं। वह किसी आड़ में एकांत में भी बैठ नहीं सकती। ना ही पुरु षों की तरह, सड़क किनारे हल्की होने की हिमाकत कर सकती है। और तो और, कई दफा इसको फेंकने की भी दिक्कतें आती हैं। तो स्त्री मंदिर या देवता को अपवित्र कैसे कर सकती है? यहां तक की घर के भीतर के ठाकुरजी को भी स्त्रियां इस दरम्यान हाथ तक नहीं लगातीं। औरतों के मंदिर में प्रवेश को लेकर मचा यह घमासान स्त्रीविरोधियों के लिए अचूक अस्त्र साबित हो रहा है। चतुर पुरु षों ने स्त्रियों के प्रवेश में व्यवधान के लिए उन दकियानूसी औरतों का इस्तेमाल किया है, जिन्हें पुरु षों के बनाए नियम-कायदे पत्थर की लकीर लगते हैं। ईरानी का बयान भी कुछ इसी परंपरा की मिसाल है। स्त्री की देह से रिसने वाला यह रक्त अव्वल तो अशुद्ध नहीं होता।

विज्ञान मानता है, यह शुद्ध रक्त होता है। जो स्त्री को उर्वर बनाए रखने में अहम भूमिका निभाता है। स्त्री की उर्वरता पर नतमस्तक होने की बजाए उसे तिरस्कृत करना, हमारे अज्ञान का आईना है। अव्वल तो आप धर्मभीरु हैं तो सभी धर्मों में जारी (कु)प्रथाओं की आलोचना से तौबा करनी चाहिए। स्त्री की समझ और उसके निर्णयों को चुनौती देने से बाज आने का वक्त आ चुका है। उसे आजादी चाहिए। उसे बराबरी का हक चाहिए। हर जगह। वह मंदिर हो, मजार हो या कोई सार्वजनिक स्थल। फ्लू के कारण देश में 542 लोगों को जान गंवानी पड़ी हैद पिछले साल यह आंकड़ा 38,811 का था, जिसमें से 2,270 लोगों की मौत हुई थीद महाराष्ट्र में 14 अक्टूबर तक स्वाइन फ्लू के 1,793 मामले सामने आए हैं, इनमें 217 लोगों को जान गंवानी पड़ी हैद इस सूची में राजस्थान दूसरे नंबर पर है। राजस्थान में स्वाइन फ्लू के 1,912 मामले सामने आए हैं, जिनमें से 191 लोगों की मौत हुई हैद गुजरात में 1,478 स्वाइन फ्लू के मामले सामने आए और 45 लोगों को जान गंवानी पड़ीद दिल्ली में 12 अक्टूबर तक 111 मामले सामने आए, जिनमें से एक की मौत हो गई।

आज का इतिहास

- **1296** : संत ज्ञानेश्वर का निधन हुआ।
- **1711** : इटली के दो प्राचीन नगरों पॉम्पी और हरकुलेनम के अवशेषों का एक ग्रामीण व्यक्ति ने पता लगाया।
- **1812** : युद्ध के दौरान अमेरिका फ्रिगेट यूनाइटेड स्टेट्स ने ब्रिटिश पोत मैसिडोनिया पर कब्जा कर लिया।
- **1870** : पहली बार अमेरिका में पोस्टकार्ड का प्रयोग किया गया।
- **1881** : स्पेन के पैब्लो पीकासो नामक चित्रकार का जन्म हुआ। उनकी कई कलाकृतियों को विश्व ख्याति प्राप्त हुई।
- **1917** : बोल्शेविक (कम्युनिस्टों) ब्लादिमीर इलिच लेनिन ने रूस में सत्ता हथिया ली।
- **1924** : अंग्रेजों ने सुभाषचंद्र बोस को गिरफ्तार करके दो साल के लिए जेल भेज दिया।
- **1940** : बेंजामिन ओ डेविस, सीनियर अमेरिकी सेना के पहले अफ्रीकी-अमेरिकी जनरल बने।
- **1945** : जापान के गठबंधन सेनाओं के समक्ष आत्मसमर्पण के बाद च्यांग काई-शेक ने ताईवान को अपने नियंत्रण में लिया।
- **1951** : भारत में पहले आम चुनाव की शुरूआत हुई।
- **1955** : पहली बार घरेलू इस्तेमाल के लिए माइक्रोवेव ओवन की ब्रिकी टप्पन नामक कंपनी ने शुरू की।
- **1960** : न्यूयॉर्क में पहली इलेक्ट्रॉनिक कलाई घड़ी बाजार में आई।
- **1964** : अवादी कारखाने में पहले स्वदेशी टैंक 'विजयंत' का निर्माण किया गया।
- **1971** : संयुक्त राष्ट्र महासभा में ताइवान को चीन में शामिल करने के लिए मतदान हुआ।
- **1980** : प्रसिद्ध उर्दू लेखक और शायर साहिर लुधियानवी का निधन हुआ ।
- **1990** : मेघालय के पहले मुख्यमंत्री कैप्टन संगमा का निधन हुआ।
- **1995** : तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव ने संयुक्त राष्ट्र के 50वें सत्र को संबोधित किया।
- **2000** : अंतरिक्ष यान डिस्कवरी 13 दिन के अभियान के बाद सकुशल धरती पर लौटा।
- **2001** : माइक्रोसॉफ्ट ने नए ऑपरेटिंग सिस्टम 'विंडोज एक्सपी' को रिलीज किया।

जानकारी

वास्तु दोष से मुक्ति पाने के लिए अपनाएं ये उपाय

कई बार घर में पैसे और अन्य किस्म की सारी सुविधाएं होने के बावजूद भी घर की परेशानियां खत्म नहीं होती। इसके पीछे की वजह वास्तुदोष हो सकता है हालांकि वास्तुशास्त्र पर कुछ लोग यकीन करते हैं तो कुछ नहीं। यदि वास्तुदोष से जुड़ी कुछ महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखा जाए तो उससे मुक्ति पाई जा सकती है। आईए जानें कुछ टिप्स जिनकी वजह से गृह क्लेश और अन्य परेशानियों से छुटकारा पाना बहुत ही आसान हो सकता है।

- ❍ घर के प्रत्येक प्रकार के वास्तु दोष को दूर करने के लिए घर के ऊपर एक मिट्टी के बर्तन में सतनाजा और दूसरे मिट्टी के बर्तन में पानी भर कर पक्षियों के लिए रखें।
- ❍ बीम के नीचे सोने या बैठने से मानसिक तनाव और क्लेश होता है इससे बचने के लिए बीम के दोनों सिरों पर लकड़ी की बांसुरी लटका दें।
- ❍ घर में भोजन करते हुए गृह स्वामी के सामने क्लेश न करें और कोई नकारात्मक बात भी न करें।
- ❍ मुख्य प्रवेश द्वार के दोनों तरफ (अगल बगल) व ऊपर रोली, कुमकुम, हल्दी, केसर आदि घोलकर स्वास्तिक व ओमकार का शुभ चिन्ह बनाएं।
- ❍ घर में मकड़ी का जाल हो तो तुरंत साफ करें, अन्यथा राहू के दुष्प्रभाव में वृद्धि होती है।
- ❍ घर में हो रही सीलन तुरंत ठीक करवा लें। यह घर की आर्थिक स्थिति पर असर डालती है। इसे ठीक करवाने से आर्थिक समृद्धि मिलेगी।

विफलता ही इंसान को सफलता का मार्ग दिखाती है

सभी के जीवन में एक समय ऐसा आता है जब सभी चीजें आपके विरोध में हो रहीं हों और हर तरफ से निराशा मिल रही हो।चाहें आप एक प्रोग्रामर हैं या कुछ और, आप जीवन के उस मोड़ पर खड़े होता हैं जहां सब कुछ गलत हो रहा होता है। अब चाहे ये कोई सॉफ्टवेर हो सकता है जिसे सभी ने रिजैक्ट कर दिया हो, या आपका कोई फैसला हो सकता है जो बहुत ही भयानक साबित हुआ हो। लेकिन सही मायने में, विफलता सफलता से ज्यादा महत्वपूर्ण होती है। हमारे इतिहास में जितने भी बिजनैस मेन, साइंटिस्ट और महापुरुष हुए हैं वो जीवन में सफल बनने से पहले लगातार कई बार फेल हुए हैं। जब हम बहुत सारे काम कर रहे हों तो ये जरूरी नहीं कि सब कुछ सही ही होगा। लेकिन अगर आप इस वजह से प्रयास करना छोड़ दें तो कभी सफल नहीं हो सकते। हेनरी फोर्ड, जो बिलियनेर और विश्वप्रसिद्ध फोर्ड मोटर कंपनी के मलिक हैं। सफल बनने से पहले फोर्ड पांच अन्य बिजनैस में फेल हुए थे। कोई और होता तो पांच बार अलग-अलग बिजनैस में फेल होने और कर्ज मे डूबने के कारण टूट जाता। फोर्ड ने ऐसा नहीं किया और आज वह एक बिलिनेअर कंपनी के मलिक हैं। अगर विफलता की बात करें तो थॉमस अल्वा एडिसन का नाम सबसे पहले आता है। लाइट बल्ब बनाने से पहले उसने लगभग 1000 विफल प्रयोग किए थे। अल्बेर्ट आइनस्टाइन जो 4 साल की उम्र तक कुछ बोल नहीं पता था और 7 साल की उम्र तक निरक्षर था। लोग उसको दिमागी रूप से कमजोर मानते थे लेकिन अपनी थ्योरी और सिद्धांतों के बल पर वो दुनिया का सबसे बड़ा साइंटिस्ट बना। अब जरा सोचो कि अगर हेनरी फोर्ड पांच बिजनैस में फेल होने के बाद निराश होकर बैठ जाता, या एडिसन 999 असफल प्रयोग के बाद उम्मीद छोड़ देता और आइंस्टीन भी खुद को दिमागी कमजोर मान के बैठ जाता तो क्या होता? हम बहुत सारी महान प्रतिभाओं और अविष्कारों से अंजान रह जाते। इसलिए असफलता सफलता से कहीं ज्यादा महत्व रखती है। असफलता ही इंसान को सफलता का मार्ग दिखाती है।

विश्वास और आस्था

एक दूसरे के बिन अधूरे

विश्वास और आस्था दो ऐसे शब्द है, जिनके मायने शायद एक दूसरे के बिलकुल करीब होते हुए भी जुदा-जुदा हैं। शायद एक जुड़वा की तरह, जिनमें भले ही कितनी भी बाहरी एकरूपता हो लेकिन मन की गहराई से एक नदी के दो किनारे होते हैं, एक साथ चलते हैं, एक दूसरे के नजदीक रहते हैं, एक दूसरे के बिन अधूरे होते हैं, सफर टेढ़ा मेढ़ा हो, उतार चढ़ाव भरा हो पर साथ नहीं छोड़ते, एक दूसरे के अनुभवों के गवाह भी बनते हैं, एक है इसीलिए दूसरे का अस्तित्व है लेकिन इतना होते हुए भी कभी आपस में मिलते नहीं।

विश्वास का जन्म तो इन्सान की पैदाइश के साथ ही हो जाता है। पैदा होते ही उस नन्हें से बच्चे को पूरा विश्वास होता है कि कोई उसकी रोती हुयी आवाज को सुन कर उसे दूध पिलायेगा। अपने स्पर्श से उसे अहसास दिलाएगा कि इस दुनियां में वो महफूज है। इन्सान अपना पूरा जीवन विश्वास में ही तो जीता है।

विश्वास जीव की मूल प्रकृति

अपने हर कदम पर वो विश्वास करता है; कभी अपने जन्म दाता में, कभी इस प्रकृति में, कभी ब्रहम्माड में, अपने हर छोटे और बड़े कर्म में। वो विश्वास करता है कि जो भोजन वो खा रहा है, वो ही उसे जीवित रखेगा। वो विश्वास करता है कि जो पानी वो पी रहा है, वो उसकी प्यास बुझायेगा। वो विश्वास करता है कि जिस धरती पर वो चल रहा है, वो उसका बोझ सम्हालेगी। वो विश्वास करता है कि जिस वायु को अपने शरीर में श्वास के माध्यम से खींच रहा है, वो उसे ऊर्जा देगी। दरअसल विश्वास का नाता हमारे रोम-रोम से है। इसके उलट आस्था हमारी पैदाइश के बाद जन्म लेती है। आस्था उत्पन्न नहीं होती बल्कि इसका विकास होता है, हमारे अपने अनुभवों के आधार पर। आस्था हमें विरासत में भी मिलती है। क्योंकि हम अक्सर उसी में आस्था रखते हैं, जिसके बारे में हमारे पुरखे हमें बताते हैं। जन्म से पहले हमारी आस्था का निर्धारण नहीं किया जा सकता। जन्म के बाद आस्था का कुछ हिस्सा हम पर थोपा जाता है, कुछ हम खुद तैयार करते है, जो हमे ठीक लगता है, हमारी अपनी प्रकृति के अनुसार, उसको हम अपना लेते हैं। कह सकते हैं कि विश्वास जीव की मूल प्रकृति है जबकि आस्था उसके संस्कारों का नतीजा होता है।

आस्था मूल प्रकृति में नही

अब सवाल ये है कि इन दोनों में कौन ज्यादा बलवान है। क्योंकि विश्वास जीव की मूल प्रकृति है इसलिये अगर इसके उलट कोई भी काम किया जायेगा तो वो खुद ब खुद इसके पक्ष में ही हो जायेगा। मसलन अगर आप एक चीज में विश्वास न कर दूसरी चीज को अपनाते हैं, तो आप दूसरी चीज में विश्वास कर लेते हैं। आप अपनी पसन्द तो बदल सकते हैं लेकिन विश्वास करने की प्रकृति नहीं। मगर इन्सान अपनी आस्था से नाता तोड़ सकता है। ये थोपी तो जा सकती है लेकिन मूल प्रकृति में नहीं होती। ये इन्सान के ऊपर है कि वो किसी एक धर्म या ईश्वर मे आस्था रखे, उसे बदल ले या फिर किसी में भी आस्था न रखे।

विश्वास अटल आस्था भंगुर

दूसरी आस्था को खोजने, उसको अनुभव करने और उसे दोबारा तैयार करने की हिम्मत नहीं रहती फिर। अगर जैसे-तैसे वो अपने लिए नई आस्था की राह तैयार भी कर ले, तो उसमें वो आत्मीयता नहीं रहती क्योंकि पहले के ख़त्म होने का दुख कुरेदता रहता है और एक के टूटने के बाद दूसरे पर चलने की ज्यादा वजह इन्सान खोज नहीं पाता। विश्वास अपने रास्ते चलता रहता है और आस्था अपने रास्ते परिपक्व होती रहती है। अगर चन्द शब्दों में समझने की कोशिश करें तो बात समझ में ये आती है कि विश्वास अटल है, मगर कमजोर भी और आस्था भंगुर है, मगर फिर भी मजबूत। एक विकसित संस्कृति में रहने वाले मनुष्य के लिए शायद ये जरुरी है कि नदी के ये दो किनारे एक दूसरे के साथ इसी तरह से चलते रहें। न जुदा हो, न ही इनमें से एक अकेला अपने अस्तित्व को सम्हालनें पर मजबूर हो और न ही ये एक दूसरे से मिलें क्योंकि नदियों के दो किनारों के मिलनें का मतलब तो होता है, विस्तार की समाप्ति और इन दोनों के मिलनें का परिणाम क्या होगा, ये अन्दाज लगाना शायद मेरी बौद्धिक क्षमता के परे है।

अच्छे कर्म और मानवता

मैं सिर्फ अच्छे कर्मों और मानवता के धर्म में विश्वास करती हूं। इंसानों और जानवरों के साथ अच्छा करने से कोई नुकसान नहीं होता। मेरा मानना है कि अच्छे कर्म और मानवता आपको दिव्यता से जोड़े रखते हैं जिससे आप जिंदगी की परेशानियों से पार निकलते हैं। कुछ धर्मों को मैं नहीं समझती लेकिन मैं उनका विरोध भी नहीं करती क्योंकि हर किसी की अपनी समझ और नजरिया है। मैं सभी धर्मों का आदर करती हूं। कठिनाइयां आपकी आध्यात्मिकता और विश्वास को बहुत ऊंचे स्तर पर ले जाती हैं। मैं जिंदगी में परेशानियों की ऐसी तमाम सीढ़ीयों को पार कर वहां पहुंची हूं जहां आज मैं हूं। लेकिन साथ ही इन्हीं चीजों ने मुझे वह बनाया है जो आज मैं हूं। मैं उम्मीद करती हूं हर कोई इसे अनुभव करता है।

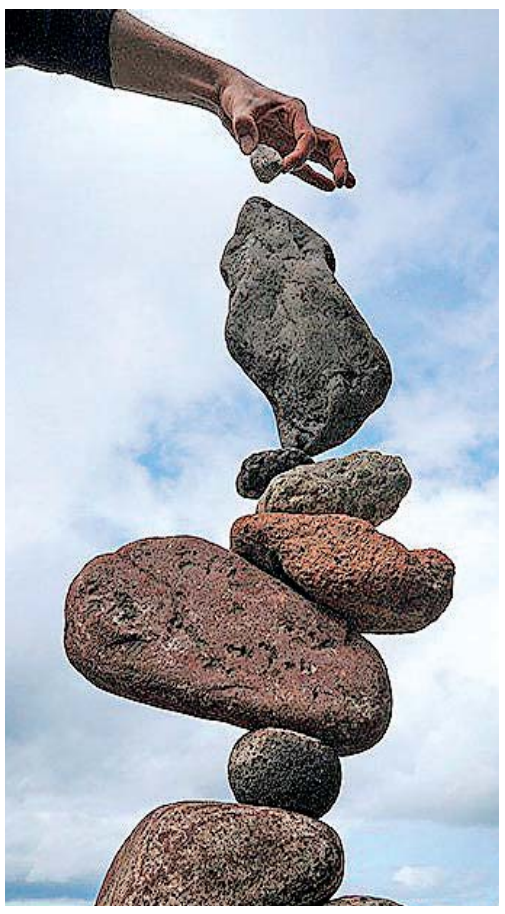

ईश्वर सकारात्मक ऊर्जा है

मेरे लिए ईश्वर सकारात्मक ऊर्जा है। कोई ऐसा जो आपको ताकत, उम्मीद और शक्ति दे। जो आपको लगातार चलने की ताकत देता है। ईश्वर का अर्थ सबके लिए अलग होता है। कुछ के लिए यह सब कुछ होता है और उनका जीवन प्रार्थना और जाप पर ही टिका होता है जबकि कुछ के लिए इसका कोई अर्थ नहीं होता। मेरे लिए यह एक ताकत है जो हम सबसे ऊपर है। हम चाहे जितनी योजनाएं बना लें, आखिर में होता वही है जो ईश्वर चाहता है। खुद के भीतर झांकने और सर्वशक्तिमान से जुड़ने का मेरा यही तरीका है। ध्यान के जरिए आप उन परेशानियों को खुद के भीतर झांक कर ठीक कर सकते हैं जिनके हल के लिए आप बाहर की दुनिया में झांकते हैं।

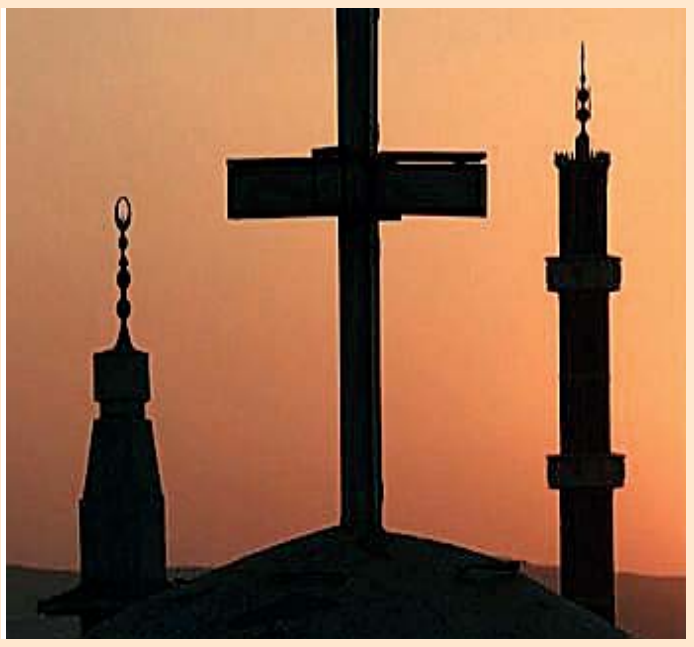

आस्था आत्मा की प्रकृति नहीं

विश्वास कभी ख़त्म नहीं होता फिर भी कमजोर होता है, बहुत जल्दी टूट जाता है, महज एक नाकामी इसे चूर-चूर कर देती है। आस्था आत्मा की प्रकृति नहीं होती, हमारे शरीर में जन्म लेती है फिर भी मजबूत होती है, ये जल्दी डिगती नहीं। केदारनाथ में प्रकृति के भयंकर तांडव के बाद भी वहां बचे हुये लोगों की आस्था नहीं डोली। इस विनाश ने शिव के सामनें ही उनसे उनके अपने छीन लिये, वो अकेले हो गये मगर शिव के प्रति उनकी आस्था डोली नहीं। बचने वाले यही कहते रहे कि शिव की अनुकंपा ने बचाया। यहां अगर बात विश्वास की होती तो शायद वो टूट जाता। वैसे कई बार विश्वास करने की मजबूरी भी होती है। अब देखिये केदारनाथ में जिन पत्थरों ने लोगों की जान ली, बचे हुये लोगों को अपनी जान बचानें के लिए उन्हीं पत्थरों पर विश्वास करना पड़ा क्योंकि विश्वास मूल हैं। हम विश्वास को बदलने के लिए फिर विश्वास करते हैं। इन दोनों ही भावनाओं की एक और खूबी ये हैं कि विश्वास अक्सर एक घटना मात्र होता है, जो टूटता तो जल्दी है लेकिन कष्ट ज्यादा नहीं देता, कुछ दिनों में उन जख्मों को इन्सान खुद भर लेता है क्योंकि एक विश्वास टूटता है तो दूसरी वजह उसे फिर मिल जाती है, नये विश्वास के लिए लेकिन अगर आस्था टूट जाये तो मनुष्य की जड़े ही हिला देती है। अपनें अनुभवों के आधार पर इन्सान आस्था का ढांचा खड़ा करता है और अगर एका-एक उसे ये मालुम चले कि जिन स्तम्भ के सहारे वो जीवन जी रहा था, वो उसके व्यक्तित्व पर खरे नहीं हैं, उसका बोझ उठाने लायक नहीं हैं, तो पूरा जीवन ही बिखर जाता है।

मनुष्य की चेतना भीतर से कब स्वस्थ होती है? : ओशो

ध्यान का पहला अर्थ है कि हम अपने शरीर और स्वयं के प्रति जागना शुरु करें। यह जागरण अगर बढ़ सके तो आपका मृत्यु-भय क्षीण हो जाता है। और जो चिकित्सा मनुष्य को मृत्यु के भय से मुक्त नहीं कर सकता, वह चिकित्सा मनुष्य नाम की बीमारी को कभी भी स्वस्थ नहीं कर सकता है। उसे भीतर की चेतना का अहसास शुरु हो जाए, भीतर की चेतना की फीलिंग शुरु हो जाए।हमें आमतौर से भीतर की कोई फीलिंग नहीं होती। हमारी सब फीलिंग शरीर की होती है -हाथ की होती है, पैर की होती है, सिर की होती है, ह्दय की होती है। उसकी नहीं होती जो मैं हूं। हमारा सारा बोध, हमारा सारी अवेयरनेस घर की होती है, घर में रहने वाले मालिक की नहीं होती। यह बड़ी खतरनाक स्थिति है। क्योंकि कल अगर मकान गिरने लगेगा, तो मैं समझूंगा - मैं गिर रहा हूं। वही मेरी बीमारी बनेगी। नहीं, अगर मैं यह भी जान लूं कि मैं मकान से अलग हूं, मकान के भीतर हूं, मकान गिर भी जाएगा, फिरभी मैं हो सकता हूं; तो बहुत फर्क पड़ेगा, बहुत बुनियादी फर्क पड़ जाएगा। तब मृत्यु का भय क्षीण हो जाएगा।

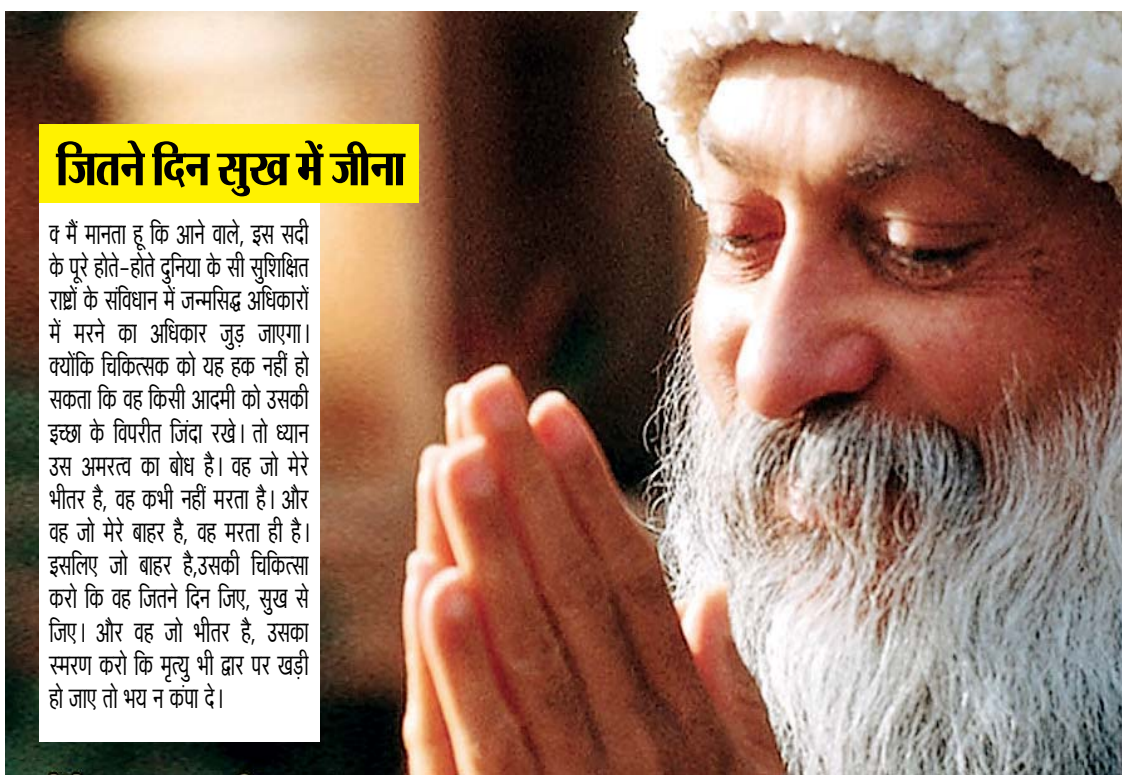

जितने दिन सुख में जीना

व मैं मानता हू कि आने वाले, इस सदी के पूरे होते-होते दुनिया के सी सुशिक्षित राष्ट्रों के संविधान में जन्मसिद्ध अधिकारों में मरने का अधिकार जुड़ जाएगा। क्योंकि चिकित्सक को यह हक नहीं हो सकता कि वह किसी आदमी को उसकी इच्छा के विपरीत जिंदा रखे। तो ध्यान उस अमरत्व का बोध है। वह जो मेरे भीतर है, वह कभी नहीं मरता है। और वह जो मेरे बाहर है, वह मरता ही है। इसलिए जो बाहर है,उसकी चिकित्सा करो कि वह जितने दिन जिए, सुख से जिए। और वह जो भीतर है, उसका स्मरण करो कि मृत्यु भी द्वार पर खड़ी हो जाए तो भय न कंपा दे।

अवेयरनेस ऑफ वनसेल्फ

हम सदा, जब भी होश में हैं, तो हमारा होश जो है वह अवेयरनेस अबाउट, किसी चीज के बाबत है सदा। वह कभी अपने बाबत नहीं है। इसीलिए तो हम अकेले बैठें तो हमको नींद आनी शुरू हो जाती है, क्योंकि वहां क्या करे ? अखबार पढ़े, रेडियो खोलें, तो थोड़ा जागनासा मालूम पड़ता है। अगर एक आदमी को हम बिलकुल अकेले में छोड़ दें, अंधेरा कर दें कमरे में। अंधेरे में इसीलिए नींद आ जाती है आपको, क्योंकि कुछ दिखाई नहीं पड़ता, तो चेतना की कोई जरूरत नहीं रह जाती। कुछ चीज दिखायी पड़ती नहीं, तो अब क्या करे, सोने के सिवाय कोई उपाय नहीं मालूम पड़ता। अकेले पड़ जाएं, अंधेरा हो, कोई बात करने को न हो, कुछ सोचने को न हो, तो बस आप गए नींद में। और कोई उपाय नहीं है।

इतना ही फर्क ...

ध्यान रहे, नींद और ध्यान एक अर्थ में समान हैं, एक अर्थ में भिन्न।नींद का मतलब है-आप अकेले हैं; लेकिन सो गए हैं। ध्यान का मतलब है: आप अकेले है लेकिन जागे हुए है। बस इतना ही फर्क है। अगर आप अपने अकेलेपन में और अपने भीतर जाग सकते है। अपने प्रति एक आदमी बुद्ध के सामने बैठा है एक दिन और अपने पैर का अंगूठा हिला रहा है। बुद्ध ने कहा कि अंगूठा क्यों हिलाते हो ? उस आदमी ने कहा, छोड़िए! ऐसे ही हिलता था, मुझे पता न था। बुद्ध ने कहा, तुम्हारा अंगूठा हिले और तुम्हें पता न हो! अंगूठा किसका है यह! तुम्हारा ही है ? उसने कहा, मेरा ही है। लेकिन आप भी कहां की बातें कर रहे हैं! आप जो बात करते थे जारी रखिए।

बुद्ध ने कहा, वह मैं नहीं करूंगा अब, क्योंकि जिस आदमी से मैं बात कर रहा हूं, वह बेहोश है। पता नहीं तुम मेरा सुन भी रहे हो कि नही।

उसने कहा कि आप भी कैसी बातें कर रहे हैं! अंगूठा हिल रहा है। बुद्ध ने कहा, तो अपने अंगूठे के हिलने का आगे से होश रखो। जो होश में है अंगूठे के प्रति, उसका होश भी पैदा हो जाएगा।

हितल टेक्सटाइल में TFO मशीन में सिर आने से कारीगर की निर्मम मौत

सूरत। जी.आई.डी.सी सचीन में हितल टेक्सटाईल नाम की कम्पनी में एक कारीगर की TFO मशीन चलाते स मय अचानक मशीन में सिर आ जाने से कारीगर को गंभीर चोट आई जिसके बाद कारीगर को ओम शिवम होस्पिटल में ले जाया गया जहां पर डॉ. ने उसे मृत घोषित कर दिया।

आई जोन-28 में आने वाली हितल टेक्सटाइल कम्पनी के कारीगरों का कहा है कि कंपनी में हमारी किसी भी प्रकार की सेफ्टी का इंतजाम कम्पनी मालीक द्वारा नहीं किया गया है। हेतल टेक्सटाइल में कारीगरो का शोषण किया जा रहा है, सरकार द्वारा बनाए गए नियमों का पालन भी हितल टेक्सटाइल नहीं कर रही है। यह कंपनी कारीगरों को बेसिक सुविधा जैसे पी.एफ, बोनस, मेडीकल, सेक्युरिटी जैसी सुविधा भी मुहैया नहीं करा रही है। लेकिन ऐसा नहीं है कि हितल टेक्सटाइल कम्पनी अकेली ऐसी कम्पनी है जो कारीगरों का शोषण कर रही हो प्रशासन के नाक तले अनेकों कम्पनीया ऐसा कर रही है। सूरत में आए दिन किसी ना किसी कम्पनी में कारीगरों के साथ हादसे होते रहते ह। मजबुरी के कारण गरीब आदमी इनमें काम करता है, और अगली अपनी बारी का इंतजार करता है। ऐसी घटनाओं के बाद कारीगरों के तथाकथित हितैशी कम्पनी के बाहर धरना देंगे और कम्पनी को बंद करने की बात करेंगे कम्पनी मालीक हाय हाय के नारे लगाएंगे। प्रशासन की कार्यवाही से बचने के लिए कम्पनी मालिक मृतक के परिजनों को लाख या पचास हजार रुपए देकर उनका मुंह बंद करवा देगा, क्योकि गरीब आदमी के पास राशन भराने के पैसे तो है नहीं वो वकील की फीस कहां से देगा। ऐसे में जगह-जगह अपनी दुकान खोले बैठे मजदूर युनियन वाले अपनी भी रोटी शेकने लेंगे। लेकिन कोई भी मजदुर युनियन वाला किसी कारीगर की मौत से पहले कम्पनी के मालिकों से बात करके कारिगरों की सुविधाओं में इजाफा करने के लिए नहीं कहेगा। लेकिन जब भी किसी कारीगर की पगार नहीं मिलेगी तो उसकी पटावट कराने पहुंच जाएगें और मालिक से बात करके उसकी आधी पगार अपनी जेब में कर लेंगे और बनेंगे की हम तुम्हारे सबसे बड़े हितैशी है, जैसे ये पुलिस और प्रशासन से भी बड़े हो गए है।

सूरत। दीपावली के निकट आते ही आरोग्य विभाग द्वारा मिठाई की दुकानों पर छापेमारी का दौर चल पड़ा है। गुरुवार को सुबह से ही आरोग्य विभाग द्वारा शहर की मशहुर मिठाई की दुकानों पर छापे मारे गए।

लिंबायत में मामा ने भांजी को बनाया हवस का शिकार

सूरत। लिंबायत इलाके में दूर के संबंध में मामा लगनेवाले युवक ने भांजी के साथ दुष्कर्म करने की शिकायत पुलिस थाने में दर्ज करवायी गई है।

लिंबायत पुलिस सूत्रों के अनुसार लिंबायत में रहनेवाली युवती अपने दूर के संबंध में लगनेवाले मामा सुरेश राजेश मामीडाला (उ.27 निवा. कोट्टापल्लीगाम वारंगल, तेलंगणा) के खिलाफ तहरीर दर्ज करवायी। इसमें कहा कि सुरेश मामीडाला हैदराबाद में आर्मी के हेड क्वार्टर्स में नौकरी करता है। सुरेश ने गत 27 अगस्त 2017 को युवती बीमार होने से उसका हाल-चाल पूछने के लिए घर आया था। वहीं युवती को घर में अकेला देखकर शारीरिक छेड़छाड़ कर लुभावनी बातें क ी। उसके बाद फरवरी 2018 में वैकेशन में घर आया था। वहीं वापी में काम होने का कहकर 10 दिन रूका था। इस दौरान युवती पर जबरन आए दिन बलात्कार किया और इसके बारे में किसी को बताने पर बदनामी करने की धमकी दी थी। पुलिस ने युवती की शिकायत के आधार पर दूर के मामा सुरेश मामीडाला के खिलाफ मामला दर्ज किया है।

डायमंड के व्यापारी ने अपने कर्मचारियों को दिवाली पर गिफ्ट की 600 कारे

सूरत। दीपावली के अवसर पर अपने कर्मचारियों को मकान, कार, ज्वैलरी जैसे महंगी गिफ्ट देनेवाले सूरत के डायमंड किंग सवजीभाई धोलकिया ने अबकि बार अपने 600 को कार गिफ्ट की है7 सूरत में आज डायमंड कंपनियों को कार भेंट की गई7 इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वीडियो कांफ्रेंस के जरिए कर्मचारियों को संबोधित किया और दिल्ली में दिव्यांग समेत 4 कर्मचारियों को कार की चाबी सौंपी।

सूरत के हरि कृष्णा एक्सपोर्ट के मालिक सवजीभाई धोलकिया जितना डायमंड किंग के रूप में मशहूर हैं, उतना ही वे उदारता के लिए जाने जाते हैं। धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में बढ़ चढ़कर योगदान देनेवाले सवजीभाई धोलकिया ने इस साल दीपावली के मौके पर अपने 600 कर्मचारियों को कार और 900 कर्मचारियों के नाम एफडी की है। धोलकिया के मुताबिक उनकी कंपनी में 4000 जितने कर्मचारी काम करते हैं। स्कील इंडिया इंसेन्टिव में इस वर्ष 1500 कर्मचारियों का चयन किया गया था। जिसमें 600 कर्मचारियों को कार और 900 कर्मचारियों को एफडी उनके इंसेन्टिव की रकम के मुताबिक प्रदान की गई7 600 कर्मचारियों को सेलेरियो और क्रिड कार बोनस के रूप में दी गई। आज सुबह सूरत में हुए इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में कर्मचारी अपने परिवार के साथ मौजूद रहे।

सजनी मर्डर केस के हत्यारा पति 15 साल बाद गिरफ्तार

क्राइमब्रांच की टीम ने जानकारी के आधार पर बेंगलुरु से गिरफ्तार किया : चौंकानेवाले खुलासे होने की संभावना

(संपूर्ण समाचार सेवा)

अहमदाबाद,२५ अक्टूबर।

अहमदाबाद सहित राज्यभर में सनसनी मचाने वाले १५ वर्ष पुराने बोपल के सजनी मर्डर केस में अहमदाबाद क्राइमब्रांच ने हत्यारा पति को बेंगलुरु से गिरफ्तार किए जाने से सनसनी मच गई। प्रेमिका को वेलेन्टाइन डे के दिन गिफ्ट देने के लिए अपनी पत्नी की गला दबाकर आरोपी पति ने उसकी हत्या कर दी थी और उसके बाद लगातार १५ वर्ष तक फरार रहा। गुजरात पुलिस के लिए पहली बन गई इस हत्या केस में वर्षों के बाद भी पुलिस आरोपी को ढूढ़ने में सफल रही है। हत्या बाद पुलिस को इसके पति पर आशंका हुई थी और गिरफ्तार करे इसके पहले ही आरोपी पति अस्पताल में भर्ती हो गया था और वहां से पुलिस हिरासत से फरार हो गया था। बोपल का यह सनसनी मर्डर केस शहरभर में चर्चा का विषय बन गया। वर्ष २००३ में बोपल के हीरापन्ना फ्लेट में मूल केरल के तरुण जीनराज और उसकी पत्नी सजनी रहते थे। तरुण मेमनगर की एक प्रसिद्ध स्कूल में पीटी का शिक्षक था जबकि सजनी निजी कंपनी में नौकरी करती थी। १४ फरवरी को शाम को सज नी की हत्या की गई लाश घर के बैडरुम से मिली थी घटना की वजह से संबंधित समय में अहमदाबाद ग्रामीण पुलिस का हिस्सा सरखेज पुलिस स्टेशन को जानकारी दिए जाने पर पुलिस घटना स्थल पहुंच गई थी। सज नी डबल बैड पर जैसे नींद में इस तरीके से पडी हुई थी, इसके शरीर पर चोट का एक भी निशान नहीं था नहीं उसके कपड़े बिखरे हुए थे। इसके घर का सामान भी व्यवस्थित था तो फिर सज नी की मौत किस तरीके से हुई यह पुलिस के लिए भी पहेली जैसी था। तरुण लगातार सज नी की हत्या हुई होने का बता रहा था। पुलिस ने तरुण की पूछताछ की तब पुलिस को पहलीबार सजनी की हत्या होने की बात में दम लगा। पुलिस ने तुरंत एफएसएल की टीम और स्निफर डॉग द्वारा जांच शुरू कर दी। पुलिसकर्मचारी फ्लेट के एक कोने में बैठकर तरुण की शिकायत दर्ज कर रहे थे और पुलिस के स्निफर डॉग सजनी की लाश जिस रुम में से मिली यह रुम में से बाहर निकलकर सीढ़ी उतर गया था।

घटना की वजह से पूरे क्षेत्र में सनसनी मच गई

इन्दिरानगर क्षेत्र में चोरों ने पूरा एटीएम ही उठाकर ले गये

सीसीटीवी कैमरे में चेहरा कैद नहीं हो इसलिए चोरों ने डीवीआर मशीन भी तोड़ दिया : पुलिस की जांच शुरू

अहमदाबाद,२५ अक्टूबर।

शहर के पूर्व क्षेत्र में चोरी का प्रमाण लगातार बढ़ रहा है। पुलिस का बंदोबस्त होने के बावजूद भी चोरी की घटना को अंजाम देते है। चोरों की हिम्मत इस हद तक बढ़ गई है कि अब वह एटीएम तोड़कर चोरी नहीं करते हैं, लेकिन पूरे एटीएम की चोरी करते हैं। देर रात को नारोल-लांभा रोड पर स्थित इन्दिरानगर में चोरों ने लाखों रुपये की नकद से भरी एटीएम ही उठाकर ले गये। इस घटना की वजह से सनसनी मच गई। दूसरी तरफ, जिस बैंक का एटीएम चोर उठाकर ले गये यह केनेरा बैंक के अधिकारी सक्रिय हो गया। नारोल पुलिस ने यह पूरे मामले में जरूरी अपराध दर्ज करके

आगे की जांच शुरू कर दी है। पुलिस सूत्रों के बताये अनुसार, नारोल-लांभा रोड पर इन्दिरानगर में केनेरा बैंक का एटीएम स्थित है। गुरुवार को सुबह में स्थानीय निवासियों द्वारा रुम में से एटीएम लापता होने की की जानकारी मिलने पर पुलिस को जानकारी दी गई थी। घटना की जानकारी मिलने पर वह तुरंत घटना स्थल पर पहुंच गये, जहां उन्होंने जांच करने पर जानकारी मिली कि देर रात को दो चोर एटीएम लेकर चले गये है। सिक्योंरिटी गार्ड बिना के एटीएम में चोर घूस गये थे, चोरों ने पहले एटीएम रुम में जाकर सीसीटीवी कैमरे पर स्प्रे मार दिया था, जि सकी वजह से किसी चोर का चेहरा सीसीटीवी कैमरे में कैद नहीं हो। इसके बाद डीवीआर मशीन भी तोड़ दिया था और बाद में रुपये से भरा एटीएम लेकर फरार हो गये थे। नारोल पुलिस स्टेशन के पुलिस इंस्पेक्टर आरए. जादव ने बताया है कि, एटीएम चोरी होने की घटना असलाली पुलिस स्टेशन की सीमा में हुई है। चोरी की समाचार मिलने पर पुलिस घटना स्थल पर पहुंच गई है, लेकिन चोरी किस पुलिस स्टेशन की सीमा में हुई है यह अभी तक निश्चित हुआ है। इस घटना में एफएसएल की टीम भी घटना स्थल पहुंच गई है।

रांदेर में मोबाइल दुकान से 12 लाख के मोबाइल चोरी

सूरत। रांदेर रामनगर इलाके स्थिम मोबाइल दुकान को चोरों ने निशाना बनाकर 12 लाख के मोबाइल चोरी कर फरार हो जाने की घटना प्रकाश में आयी है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की है।

रांदेर पुलिस के मुताबिक वराछा बरोडा प्रिस्टेज के पास हंस सोसायटी निवासी चंद्रेश हिम्मत राजा रांदेर रोड रामनगर चार रास्ते पर मोबाइल की दुकान हैं। बुधवार को सुबह पांच अज्ञातों ने दुकान को निशाना बनाया। चादर ओढ़कर आये चोरों ने दुकान का शटर तोड़कर अंदर से काउन्टर समेत अन्य जगह पर रखे अलग-अलग कंपनी के मोबाइल 98 नग जिसकी कीमत 12 लाख रूपए की चोरी कर फरार हो गए। सुबह चंद्रेश राजा दुकान खोलने के लिए गए तब दुकान में मोबाइल चोरी होने की जानकारी मिली। घटना की सूचना मिलने पर पुलिस काफिला घटना स्थल पर पहुंच गया। पुलिस ने मामला दर्ज कर सीसीटीवी फुटेज के आधार पर आगे की जांच कर रही है।

विवाहिता को किया बेघर, ससुरवालों के खिलाफ शिकायत दर्ज

सूरत। शहर के डभोली इलाके में विवाहिता से दहेज में 10 लाख रूपए की मांग शारीरिक-मानसिक रूप से प्रताड़ित कर जान से मारने की धमकी देने की शिकायत पुलिस थाने में दर्ज हुई।

महिला पुलिस सूत्रों के अनुसार डभोली स्वामीनारायण के पास हरिदर्शन सोसायटी में रहनेवाली विवाहिता ने पति विशाल मनजी सोरंडिया, सास रसिलाबेन, देवर हिमांशु के खिलाफ तहरीर दर्ज की है। इसमें बताया कि ससुरालवालों ने एकदूजे की मदद से शादी के बाद शारीरिक-मानसिक रूप से प्रताड़ित कर दहेज में 10 लाख रूपयों की मांग कर जान से मारने की धमकी देकर घर से बाहर निकाल दिया। पुलिस शिकायत के आधार पर मामला दर्ज कर आगे की जांच कर रही है।

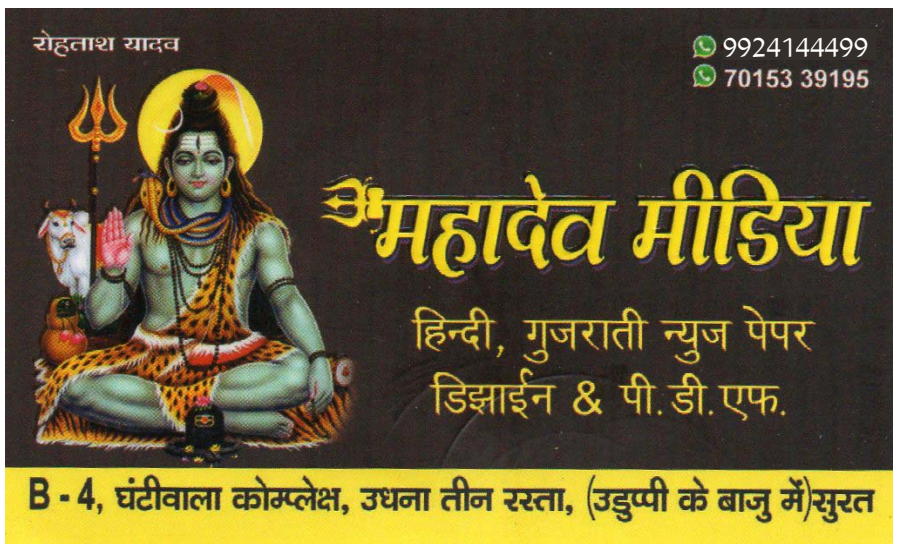

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक सुरेश मौर्या द्वारा अष्ट विनायक ऑफसेट एफपी. 149, प्लोट 26 खोडियार नगर, सिद्धीविनायक मंदिर के पास, (भाटेना) हॉ.सो. अंजना सूरत, गुजरात से मुद्रित, एवं 191 महादेव नगर, हरि नगर-2 के पीछे, उधना, जिला-सूरत, गुजरात से प्रकाशित, **संपादक :- सुरेश मौर्या** फोन नं. (9879141480) **RNI.No. : GUJHIN/2018/75100**, E-mail: krantisamay@gmail.com